कुण्डली मिलान

- रश्मि शर्मा

विवाह एवं प्रेम संबंध के अर्थ अब बदल चुके हैं। इन संबंधों का चयन अब भौतिक मापदण्डों के आधार पर होता है। फलस्वरूप संबंधों में कटुता और अलगाव की घटनाएं बढ़ रही हैं। कुछ संबंध तो सामाजिक बंधन तथा संस्कारों के कारण मजबूरी में निभ जाते हैं और कुछ कोर्ट-कचहरी में पहुँच जाते हैं।

प्रस्तुत कुंडली भी एक ऐसे ही दम्पत्ति की है जिनका विवाह सितम्बर 2008 में हुआ। शादी के एक वर्ष पश्चात् ही जून 2009 में इन्हें कन्या रत्न की प्राप्ति हुई और इसके तुरन्त बाद ही इनके बीच तनाव आरम्भ हो गऐ जो इतने बढ़े कि जुलाई 2009 में इन्होंने तलाक के लिए याचिका दायर कर दी।

वैवाहिक जीवन में उत्पन्न इस तनाव की घटना को मैं कुंडली के माध्यम से बताने का प्रयास करुंगी।

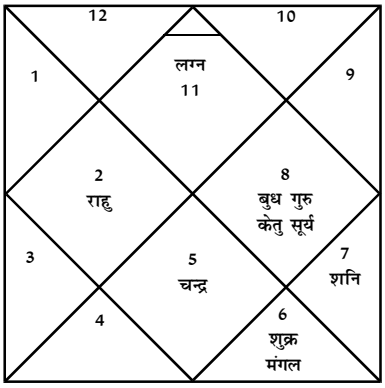

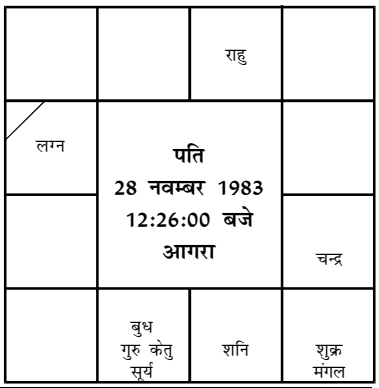

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$07^0\,06'$	$11^0\,50'$	$22^0\,51'$	$12^0\,08'$	$27^0\,26'$	$24^0\,39'$	$26^0\,48'$	$16^0\,55'$	$22^0\,20'$
कारक	दारा	मातृ	ज्ञाति	आत्म	भ्रातृ	अमात्य	पुत्र	

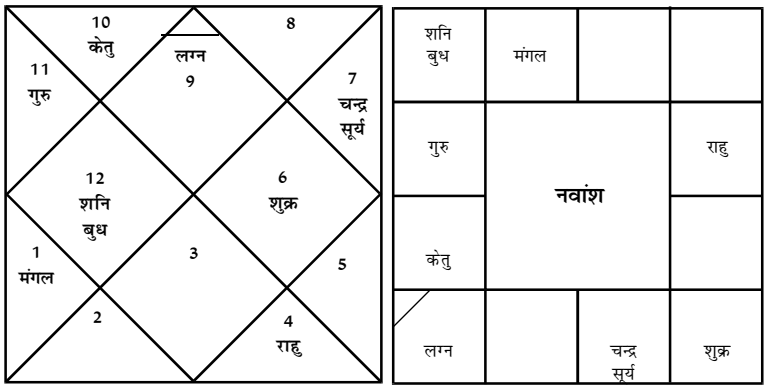

सर्वप्रथम हम कुंडली में पारंपरिक मिलान की जांच करेंगे।

पारंपरिक विश्लेषण

1. अष्टकूट मिलान - मात्र 17 गुण मिलते हैं।

पुरुष का पूर्वाषाढ़ के द्वितीय चरण क तथा स्त्री का पूर्वाफाल्गुनी के तृतीय चरण का जन्म होने के कारण इनका मध्यनाड़ी दोष है जो कि सूक्ष्म नाड़ी दोष है। वाराहमिहिर के अनुसार आदी नाड़ी में दोनों के नक्षत्र होने से वियोग, मध्य नाड़ी में दोनों की मृत्यु तथा अन्त्य नाड़ी में अत्यंत दु:ख व वैधव्य कहा गया है। नाड़ी दोष को सभी ज्योतिषीय ग्रन्थों में दाम्पत्य सुख का नाशक माना गया है।

कुंडलियों में नव-पंचम (9/5) भकूट दोष है जो सन्तान सुख में कमी कर सकता है।

दोनों की कुंडली में अष्टमस्थ मांगलिक दोष भी है।

कुल मिलाकर पारंपरिक मिलान पूर्ण संतुष्ट नहीं करते हैं। अन्य भाव मिलान भी सही नहीं है।

व्यक्तिगत विश्लेषण

पति का सप्तम भाव, सप्तमेश सूर्य और कारक शुक्र

1. सप्तम भाव में षष्ठेश चन्द्रमा की स्थिति लड़ाई-झगड़े को दर्शाती है।

2. सप्तमेश सूर्य - सूर्य दशम भाव में राहु-केतू अक्ष में है साथ ही दो शुभ ग्रह बुध तथा गुरु भी हैं परन्तु राहु-केतु से समीपतम अंशों पर होने के कारण उनका प्रभाव अधिक है। बुध यहां अष्टमेश भी है जो किसी प्रकार

का व्यवधान दिखा रहा है।

नवांश में जन्मकुंडली का सप्तमेश सूर्य नीच का है और मंगल से दृष्ट है। नवांश का सप्तमेश बुध भी नीच का है और पापग्रह शनि से युक्त है।

3. कारक शुक्र – विवाह का कारक शुक्र नीच का होकर अष्टम भाव में स्थित है साथ ही पापग्रह मंगल से युक्त है। कुंडली में बुध ($27^0\,26'$) व शुक्र ($26^0\,48'$) निकटतम अंशों पर हैं जो विवाह के लिए ठीक नहीं है क्योंकि शादी का कारक शुक्र कालपुरुष कुंडली में बुध की कन्या राशि में नीच का होता है।

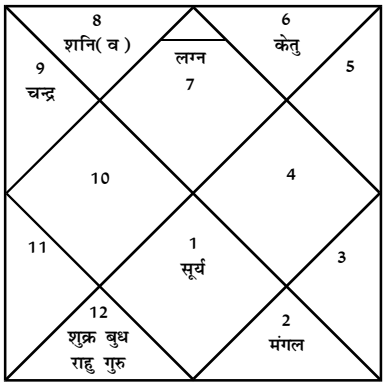

शुक्र बुध गुरु राहु	सूर्य	मंगल	
	पत्नी 19 अप्रैल 1987 19:40:00 बजे दिल्ली		
चन्द्र	शनि(व)	लग्न	केतु

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$17^0\,08'$	$05^0\,18'$	$17^0\,33'$	$15^0\,35'$	$17^0\,26'$	$17^0\,48'$	$02^0\,36'$	$27^0\,10'$	$17^0\,43'$
कारक	ज्ञाति	भ्रात	पुत्र	मातृ	अमात्य	दारा	आत्म	

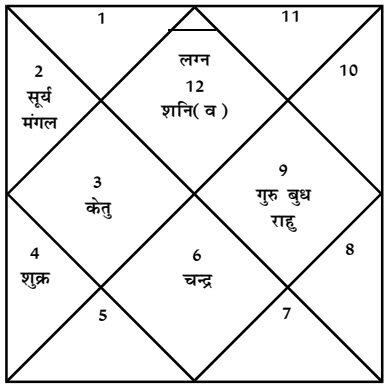

लग्न शनि(व)		सूर्य मंगल	केतु
	नवांश		शुक्र
गुरु बुध राहु			चन्द्र

4. राशि तुल्य नवांश- इसमें में सप्तमेश सूर्य नीच का होकर षष्ठेश चन्द्रमा से युक्त और मंगल से दृष्ट है। कारक शुक्र अष्टम भाव में नीच का है और शनि से दृष्ट है। यहां भी स्थिति अच्छी नहीं है।

विशेष - नवांश में तीन ग्रह बुध, शुक्र और सूर्य नीच के हैं जिनकी दशा-अंतर्दशा विवाह में समस्या उत्पन्न कर सकती है।

पत्नी का सप्तम भाव, सप्तमेश मंगल और कारक शुक्र

1. सप्तम भाव- सप्तम भाव में उच्च का सूर्य स्थित है जिसे विच्छेदकारी की संज्ञा प्राप्त है। सप्तम भाव राहु-मंगल की पापकर्तरी में भी है।

2. सप्तमेश मंगल अष्टम भाव में वक्री शनि से दृष्ट है।

नवांश में जन्मकुंडली के सप्तमेश मंगल वर्गोत्तम है लेकिन षष्ठेश सूर्य से युक्त है तथा वक्री शनि से दृष्ट है।

3. कारक शुक्र - शुक्र उच्च का है परन्तु छठे भाव में राहु-केतु अक्ष में पीड़ित है।

4. पत्नी का राशि तुल्य नवांश - लग्न व सप्तम भाव में कोई ग्रह नहीं है। सप्तमेश गुरु पर सूर्य व शनि की दृष्टी है। सप्तम भाव पर सप्तमेश गुरु की शुभ दृष्टि भी है।

विशेष - जन्मकुंडली में राहु-केतु, बुध व चन्द्रमा समान अंशों पर हैं तथा भावमध्य में भी है। द्वादशेश बुध का राहु-केतु से समान अंशों पर होना विवाह के सुख में बाधा को दर्शाता है। जातिका का लग्न व सप्तम भाव दोनों की पापकर्तरी में हैं।

1. दोनों कुंडलियों में चन्द्रमा से चतुर्थ भाव राहु-केतु अक्ष में है जो मानसिकता के कारण घर में हुई परेशानी को दर्शा रहा है।

2. दोनों कुंडलियों में से एक में कारक शुक्र नीच का है तो दूसरे में पाप प्रभाव में, समस्या देने में सक्षम है।

3. दोनों कुंडलियों में कारक गुरु पीड़ित है अत: सन्तान सुख में कमी हुई।

विवाह में तनाव - तनाव के समय पति की विंशोत्तरी दशा **मंगल/बुध /चन्द्र** की थी। महादशानाथ मंगल अष्टम भाव में कारक शुक्र को पीड़ित

कर रहा है।

नवांश में भी मंगल जन्मांग के सप्तमेश सूर्य को देखता है। पंचम भाव में मंगल की स्थिति संतान दे सकती है। अंतर्दशानाथ बुध अष्टमेश होकर सप्तमेश सूर्य से युक्त है और पंचमेश होकर स्व-नक्षत्र में है जो संतान प्राप्ति को दर्शाता है। पंचमेश का स्व-नक्षत्र में तथा राहु-केतु अक्ष में होना संतान सुख में कमी को भी दिखाता है अत: पिता बच्चे से दूर हुआ।

नवांश में अंतर्दशानाथ बुध स्वयं सप्तमेश है लेकिन नीच का है और शनि से युक्त है। प्रत्यन्तरदशानाथ चन्द्रमा लड़ाई-झगड़े और कोर्ट-कचहरी के छठे भाव का स्वामी है।

गोचर - जुलाई 2009 में शनि सप्तम भाव में चन्द्रमा पर लगभग समान अंशों पर गोचरस्थ थे।

दशा - पत्नी की विंशोत्तरी दशा राहु/चन्द्र/शुक्र की थी। महादशानाथ राहु भावमध्य में होकर छठे भाव में स्थित हैं और द्वादशेश बुध को पीड़ित कर रहे हैं।

नवांश में राहु नवांश के सप्तमेश बुध से युक्त है। अंतर्दशानाथ चन्द्रमा नवांश के पंचमेश हैं अत: संतान प्राप्ति दिखा रहा है। परन्तु चन्द्रमा के बाद मंगल की अंतर्दशा है जो सप्तमेश होकर अष्टम में शनि से दृष्ट है जो विवाह के लिए खराब सिद्ध हुई।

निष्कर्ष - इस प्रकार से हमने देखा कि पारंपरिक मिलान के साथ चूंकि कुंडली का व्यक्तिगत विश्लेषण भी ठीक नहीं था इसलिए इनके दाम्पत्य जीवन में तनाव उत्पन्न हुआ और प्रतिकूल दशा व गोचर होने के कारण इन्हें अलग होना पड़ा। केवल मंगल दोषसाम्य भी इन्हें वैवाहिक सुख नहीं दे सका।

*****